CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding; MIDF

हिन्दी ३८

१५३६८

समाज विकासमाला

पाटलिपुत्र

साहित्य मण्डल प्रकाशन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

समाज-विकास-माला : ९८

पाटलिपुत्र

भारत के एक प्राचीन नगर की कहानी

हि० ५८

लेखक
लक्ष्मणप्रसाद भारद्वाज

१३४९

संपादक
यशपाल जैन

पुस्तक भेंट के निमित्त है

१९५९
सस्ता साहित्य मंडल-प्रकाशन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल,
नई दिल्ली

पहली बार : १९५९

मूल्य
४० सैंतीस नये पैसे

मुद्रक
इंडिया प्रिंटर्स
दिल्ली-६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामने आज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों आदमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में सरकार की ओर से यदि कुछ कोशिश हो रही है तो वही काफी नहीं है। यह बड़ा काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा।

बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जबसे ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग बढ़ गई है, जो बहुत ही आसान हों जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार और बोलचाल की हो और जो मोटे टाइप में बढ़िया छपी हों।

यह पुस्तक-माला इन्हीं बातों को सामने रखकर निकाली गई है। इसमें कई पुस्तकें निकल चुकी हैं। इन सबकी भाषा बड़ी आसान है। विषयों का चुनाव बड़ी सावधानी से किया गया है। छपाई-सफाई के बारे में भी विशेष ध्यान रखा गया है। हर किताब में चित्र भी देने की कोशिश की है।

यदि पुस्तकों की भाषा, शैली, विषय और छपाई में किसी सुधार की गुंजाइश मालूम हो तो उसकी सूचना निस्संकोच देने की कृपा करें।

—मंत्री

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पाठकों से

भारत के कई स्थानों का हाल आप इस माला में पढ़ चुके हैं। उनकी अपनी-अपनी महिमा है। लेकिन पाटलिपुत्र, जिसे अब पटना कहते हैं, अपने ढंग का एक ही नगर है। उसने बड़े उलट-फेर देखे हैं। कभी उसके भाग्य का सूर्य तेजी से चमका है तो कभी अस्त हो गया है। पर भारत के आजाद होने के बाद अब पटना का भाग्य फिर चेत गया है। वह बिहार राज्य की राजधानी है और उसका विकास बराबर होरहा है।

इस पुस्तक में इस नगर का पुराने समय से लेकर अबतक का हाल दिया गया है। इसे पढ़कर आपको अपने एक महत्वपूर्ण नगर का परिचय मिलेगा, आपका ज्ञान बढ़ेगा।

—संपादक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पाटलिपुत्र

: १ :

किसी जमाने में पाटलिपुत्र हमारे देश का एक बहुत ही प्रसिद्ध नगर था। आजकल इसीको पटना कहते हैं। किसी समय में वह हमारे देश की राजधानी था। वहां बड़ी-बड़ी सभाएं होती थीं और उत्सव मनाये जाते थे। दिल्ली में आजकल जैसे भारत के राष्ट्रपति और प्रधान मंत्री के रहने के स्थान और संसद्-भवन तथा बड़े-बड़े दफ्तर हैं, वैसे ही उन दिनों भारत के राजा-रानियों के महल और राज-दरबार आदि के बड़े-बड़े भवन पाटलिपुत्र में थे।

महाभारत में जरासंध नामक राजा का वर्णन आता है। वह मगध में राज्य करता था। आजकल जहां गया और पटना के जिले हैं, वहां उन दिनों मगध का राज्य था। जरासंध बड़ा ही अत्याचारी था। आस-पास के राजा उसके डर से कांपते थे। बहुत-से राजा तो उसकी जेल में कैद थे। महाबली भीम ने अंत में उसको पछाड़ा था।

मगध की राजधानी पहले राजगृह थी, बाद में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पाटलिपुत्र हुई। पाटलिपुत्र की स्थापना मगध के राजा अजातशत्रु के कुमार उदायीभद्र ने की थी। इससे पहले वहां एक छोटा-सा गांव था, जिले पाटल या पाटली ग्राम कहते थे। आस-पास की जगहों को आते-जाते समय महात्मा बुद्ध ने यहां आराम किया था।

पाटलिपुत्र का दूसरा नाम कुसुमपुर भी था, क्योंकि जिस जगह यह नगर बसाया गया था, वहां सुंदर लाल फूलों का एक पेड़ था। इसी पेड़ के फूलों के कारण वह कुसुमपुर कहलाया।

पाटलिपुत्र की कहानी बड़ी लंबी है। आर्यों के बसने के कुछ दिनों बाद ही मगध राज्य स्थापित हो गया था। उन दिनों राज्यों को 'जनपद' के नाम से पुकारते थे।

वैसे तो मगध राज्य में पहले भी कई प्रतापी राजा हो चुके थे, परंतु बिंबिसार नामक राजा तो बहुत ही प्रसिद्ध हुआ। उसके समय में मगध राज्य उत्तरी भारत का सबसे बड़ा राज्य बन गया। राजगृह को बिंबिसार ने ही मगध की राजधानी बनाया था। जिन दिनों महात्मा बुद्ध भारत में घूम-घूमकर धर्म का उपदेश दे रहे थे, उन दिनों मगध का राजा बिंबिसार ही था। बुद्ध बिंबिसार के राज-दरबार में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भी गये थे और उन्होंने उसे अपना उपदेश सुनाया था। उनके उपदेशों का राजा बिंबिसार पर बड़ा असर

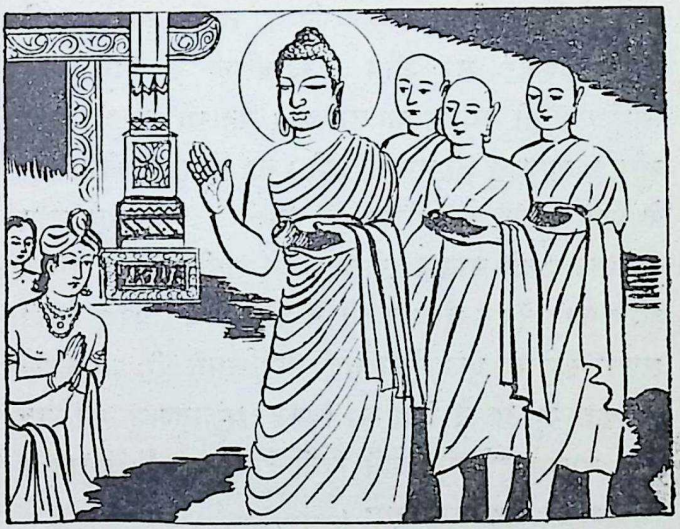

भगवान बुद्ध राजा बिंबिसार के यहां

पड़ा था और कहते हैं उन्हीं उपदेशों का यह फल हुआ कि राजा ने अपने महल में पशुओं के मारे जाने पर रोक लगा दी। हमारे देश का एक बहुत प्रसिद्ध वैद्य जीवक भी इसी राजा के समय में हुआ।

राजा बिंबिसार के जीवन के आखिरी साल बड़े कष्ट में बीते। जैसे मुगल बादशाह औरंगजेब ने अपने बूढ़े पिता शाहजहां को कई साल किले में कैद रखा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

था, उसी तरह राजा बिंबिसार को उसके पुत्र अजातशत्रु ने कैद में डाल दिया था। उसने बिंबिसार को भोजन देना भी बंद कर दिया, ताकि वह भूख से तड़प-तड़पकर मर जाय। बिंबिसार से मिलने की सिर्फ एक ही व्यक्ति को छूट थी। वह थी उसकी रानी और अजातशत्रु की माता वैदेही। वह छिपकर बिंबिसार के लिए कटोरे में भोजन ले जाती। जब यह बात अजातशत्रु को मालूम हुई तो उसने रानी को मार डालने की धमकी देकर ऐसा करने से रोक दिया, परंतु वैदेही अपनी देह पर एक ऐसा चूर्ण मल लाती थी, जो राजा को कुछ खुराक दे देता था। जब अजातशत्रु को यह बात मालूम हुई तो उसने रानी वैदेही का बिंबिसार से मिलना ही बंद कर दिया।

बिंबिसार महात्मा बुद्ध का बड़ा भक्त था। उसे बुद्ध के दर्शन बिना चैन न पड़ता था। उसके कारण महात्मा बुद्ध ने गृद्धकूट नामक पहाड़ पर एक ऐसे स्थान पर आसन जमाया, जहां से राजा बिंबिसार खिड़की के रास्ते उनके दर्शन कर लें। उनके दर्शन से ही बिंबिसार अपने-आपको जीवित रख सका। पर जब अजातशत्रु को यह बात मालूम हुई तो उसने उस खिड़की को बंद करवा दिया। बिंबिसार वैसे ही काफी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बूढ़ा हो चुका था। बेटे ने जब एक के बाद एक उसे बहुत कष्ट दिये तो वह दुखी होकर मर गया।

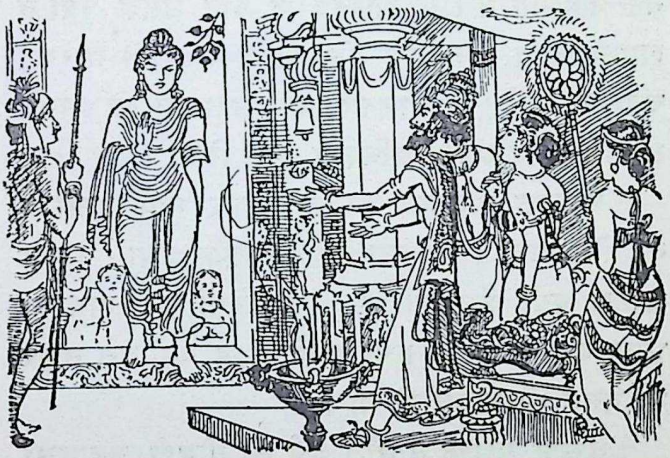

बिंबिसार की बुद्ध-भक्ति

अजातशत्रु और उदायीभद्र के बाद बहुत-से राजा मगध के राजसिंहासन पर बैठे। गद्दी के लिए आए-दिन कुचक्र चलते रहते थे। ऐसे ही एक कुचक्र से कुछ समय बाद महापद्मनंद नाम का एक राजा मगध का स्वामी बना।

महापद्मनंद के समय में मगध का राज्य बहुत बढ़ा। आस-पास के कई जनपद उसके अधीन हो गये। उसके प्रधान मंत्री का नाम कल्पक था। कल्पक बड़ा होशियार और दूर की सोचनेवाला था। उसीकी सूझ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

से राज्य का इतना फैलाव हुआ। महापद्मनंद जाति का शूद्र था। उसके आठ पुत्र थे। ये सब मिलाकर 'नव-नंद' कहलाते थे। महापद्मनंद के बाद उसके पुत्रों ने शासन किया। आखिरी नंद घननंद था, जिसे मारकर चंद्रगुप्त मौर्य ने चाणक्य की सहायता से मगध साम्राज्य पर अपना अधिकार जमा लिया।

चंद्रगुप्त ने घननंद का नाश कर मौर्य-साम्राज्य की नींव डाली। यह वंश बड़ा ताकतवर हुआ। सम्राट् अशोक इसी वंश का था। उन दिनों पाटलिपुत्र का भाग्य बड़ा ऊंचा था। पहले की तरह वह उस समय भी मगध की राजधानी थी।

सम्राट् अशोक ने बौद्ध धर्म की तीसरी महासभा का जलसा पाटलिपुत्र में ही किया। इसी महासभा में यह तय किया गया कि देश के बाहर विदेशों में भी लोगों को भेजकर बौद्ध धर्म का प्रचार किया जाय। यह महासभा अशोक ने पाटलिपुत्र के प्रसिद्ध विहार 'अशोकाराम' में कराई थी। जलसे के सभापति अशोक के धर्मगुरु उपगुप्त थे। जलसे के समाप्त होने पर आचार्य उपगुप्त ने एक हजार ऐसे भिक्षुओं को चुन लिया, जो बड़े विद्वान् और अनुभवी थे। इन एक हजार भिक्षुओं की सभा नौ महीने तक होती रही। इसमें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

झगड़े के बहुत-से विषयों पर विचार किया गया। इससे बहुत-से झगड़े निबट गये। साथ ही आचार्य उपगुप्त ने देश-विदेश में बौद्ध धर्म का प्रचार करने के लिए एक बड़ी योजना तैयार की। तय हुआ कि बौद्ध भिक्षुओं की मंडलियां दूसरे देशों में उपदेश के लिए भेजी जायं। अशोक का पुत्र महेंद्र लंका में बौद्ध धर्म का प्रचार करने के लिए भेजा गया।

अशोक के पुत्र का बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए लंका को प्रस्थान

मौर्य-सम्राटों के जमाने में पाटलिपुत्र बहुत ही बड़ा नगर था। यूनानी सिकंदर के सेनापति सेल्यूकस का दूत मैगस्थनीज यहां आया था। वह कई साल तक पाटलिपुत्र में रहा। उसने विस्तार से पाटलिपुत्र का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हाल लिखा है। वह लिखता है, "पाटलिपुत्र चौकोर नगर है। इसके चारों ओर लकड़ी की एक दीवार है, जिसके बीच में तीर छोड़ने के लिए बहुत-से छेद बने हैं। दीवार के साथ-साथ नगर के चारों ओर एक खाई है। यह नगर की रक्षा का काम करती है और नगर का मैला बहाने का भी। यह खाई ४५ फुट गहरी और ६०० फुट चौड़ी है। नगर का परकोटा ५७० बुर्जों से सुशोभित है और उसमें ६४ द्वार हैं।

चंद्रगुप्त के समय में पाटलिपुत्र का प्रबंध तीस नागरिकों की एक सभा के हाथ में था। इस सभा को 'पौर सभा' कहते थे। यह पौर सभा छोटी-छोटी छः और कमेटियों में बंटी थी। हर कमेटी के पांच-पांच सदस्य होते थे। उनमें से हरेक का अलग-अलग काम था।

पहली कमेटी मजदूरों और कारीगरों की देखभाल रखती थी। दूसरी परदेस से आनेवाले लोगों का आदर-सत्कार करती थी। उनके कामों पर कड़ी निगाह रखने की जिम्मेदारी भी उसीके सुपुर्द थी। तीसरी मर्दुम-शुमारी का काम करती थी। चौथी व्यापारियों के लिए खरीद और बिक्री के नियम बनाती थी और नाप-तौल के बांटों पर निगाह रखती थी। पांचवीं व्यापारियों को नई और पुरानी चीजों की मिलावट करके उन्हें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बेचने से रोकती थी। छठी चुंगी वसूल करती थी।

: २ :

मौर्यों के बाद मगध साम्राज्य के पैर डगमगाने लगे और शक जाति के लोगों ने उसपर हमले करने शुरू कर दिये। शकों से बार-बार हारकर मगध-साम्राज्य कमजोर हो गया। नतीजा यह हुआ कि सातवाहन वंश के राजाओं ने मगध के राज्य पर आसानी से अपना कब्जा कर लिया। सातवाहन राजाओं ने पाटलिपुत्र को छोड़कर उज्जैनी को अपनी राजधानी बनाया। उज्जैनी के भाग्य चमके। पाटलिपुत्र की शान फीकी पड़ गई।

सातवाहन वंश के राजाओं को कुशाण वंश के राजा कनिष्क ने हरा दिया। कनिष्क की सेना अयोध्या में आगे बढ़कर पाटलिपुत्र तक आ पहुंची। वहां का राजा कनिष्क की सेना की ताकत के आगे बेबस था। वह परास्त हो गया। हरजाने के रूप में भगवान् बुद्ध का कमण्डलु और अश्वघोष नाम के बौद्ध विद्वान् को साथ लेकर कनिष्क पाटलिपुत्र से ही लौट गया।

कनिष्क ने पाटलिपुत्र को जीतकर अपने अधीन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तो कर लिया, पर उसे अपनी राजधानी नहीं बनाया। उसका राज्य बहुत बड़ा था और आजकल की भारत की सीमा से बाहर के भी बहुत-से देश उसमें शामिल थे। उसके राज्य की सीमा चीन तक फैली हुई थी।

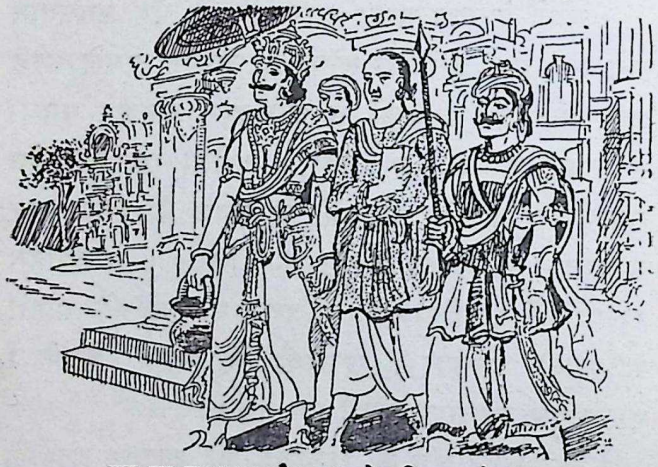

बुद्ध का कमण्डलु और अश्वघोष विद्वान को साथ लेकर कनिष्क की वापसी

इतने बड़े राज्य के लिए पाटलिपुत्र को राजधानी बनाना ठीक नहीं था। वैसे अपने प्राचीन गौरव के कारण कनिष्क के साम्राज्य की राजधानी होने का गौरव पाटलिपुत्र को ही मिलना चाहिए था, लेकिन बहुत-कुछ सोच-विचारकर पुराने कुसुमपुर (पाटलिपुत्र) के समान उसने नये कुसुमपुर की स्थापना की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

और उसे 'पुष्पपुर' नाम दिया। यही पुष्पपुर आजकल पेशावर के नाम से पुकारा जाता है।

पुष्पपुर के राजधानी होने से पाटलिपुत्र की शान कम हो गई। कनिष्क ने पुष्पपुर में बहुत-सी इमारतें बनवाईं। इन सबमें मुख्य एक स्तूप था, जो ४०० फुट ऊंचा था। उसमें तेरह मंजिलें थीं। प्रसिद्ध चीनी यात्री हुएनसांग इस स्तूप को देखकर अचरज में आ गया। कनिष्क के शासन-काल में पाटलिपुत्र की राज-

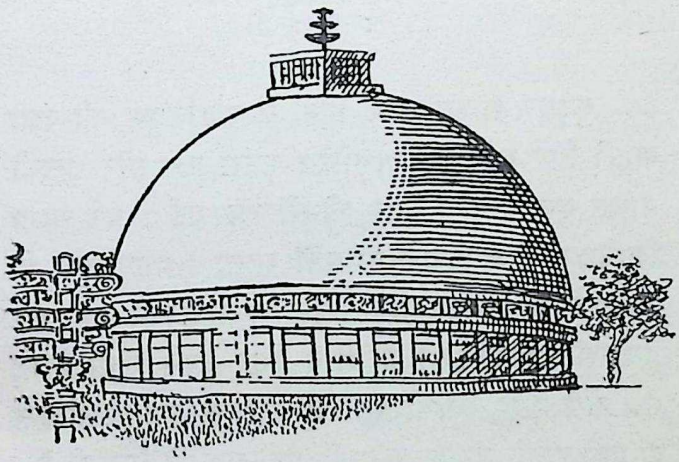

चारसौ फुट ऊंचा स्तूप

नैतिक महत्ता तो जाती ही रही, पुष्पपुर विद्या, धर्म और संस्कृति का केंद्र भी बन गया। फिर भी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पाटलिपुत्र के पुराने महत्व को भुलाया नहीं जा सकता था। प्रसिद्ध विद्वान् अश्वघोष वहां रहा। और भी बहुत-से विद्वान् वहां समय-समय पर आते रहे। आचार्य चरक भी वहीं थे। वह अपने समय के सबसे बड़े वैद्य थे। उनकी लिखी 'चरक-संहिता' पुस्तक आज भी अपने विषय की बहुत ही ऊंचे दर्जे की पुस्तक मानी जाती है।

: ३ :

कुशाण-साम्राज्य के दिनों में पाटलिपुत्र की दशा काफ़ी गिर गई। उसका गौरव जाता रहा और उसकी हालत एक मामूली नगर की-सी रह गई। पर भाग्य किसीका भी सदा एक-सा नहीं रहता। पाटलिपुत्र के भाग्य ने भी पलटा खाया। कुशाण-साम्राज्य का पतन हुआ और पाटलिपुत्र की शान फिर बढ़ने लगी। यह सब कैसे हुआ, इसकी बड़ी ही रोचक कहानी संस्कृत के एक पुराने नाटक 'कौमुदी महोत्सव' में मिलती है। वह इस प्रकार है। मगध में सुंदर वर्मा नाम का एक राजा राज्य करता था। वहां के किसी पुराने राजवंश के साथ उसका संबंध था। सुंदरवर्मा के कोई पुत्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

न था। इसलिए उसने चंडसेन नाम के एक कुमार को गोद ले लिया। पर बुढ़ापे में सुंदरवर्मा के एक पुत्र पैदा हुआ। उसका नाम कल्याणवर्मा रखा गया। अब मगध राज्य का उत्तराधिकारी कल्याणवर्मा हो गया और चंडसेन का राजगद्दी पर कोई अधिकार न रहा।

चंडसेन को यह बात बुरी लगी। उसने लिच्छवि-वंश के राजाओं की सहायता से मगध राज्य पर हमला कर दिया। लड़ाई में सुंदरवर्मा मारा गया। उसके पुत्र बालक कल्याणवर्मा के प्राण बचाने के लिए मगध राज्य के मंत्री मंत्रगुप्त ने उसे पाटलिपुत्र से हटाकर पंपापुर के जंगलों में रखा। चंडसेन ने पाटलिपुत्र को जीत लिया और वह वहां का राजा बन बैठा।

उधर पाटलिपुत्र के मंत्री, जो कल्याणवर्मा को जंगल में ले जाकर छिपे थे, मगध राज्य पर फिर अधिकार जमाने का प्रयत्न करने लगे और आखिर में उन्हें इस काम में सफलता मिल ही गई। चतुर मंत्री ने राजा चंडसेन के विरुद्ध उसकी राजधानी से दूर एक विद्रोह खड़ा करा दिया। उसे दबाने के लिए चंडसेन को अपनी राजधानी छोड़कर जाना पड़ा। उसी समय मंत्री की सेनाओं ने नगर पर हमला कर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दिया। पाटलिपुत्र की जनता ने उनका साथ दिया। नतीजा यह हुआ कि पाटलिपुत्र के राजसिंहासन पर कल्याणवर्मा बैठ गया। इसी जीत की खुशी में पाटलिपुत्र में नागरिकों ने बड़ी धूमधाम से 'कौमुदी महोत्सव' मनाया।

: ४ :

गुप्तवंश के राजाओं के उदय के साथ पाटलिपुत्र की शान फिर बढ़ने लगी। उस वंश में समुद्रगुप्त एक बहुत बड़ा राजा हुआ। उन दिनों मगध के उत्तर में लिच्छवियों का बलशाली गणराज्य था। समुद्रगुप्त के पिता चंद्रगुप्त ने लिच्छवि-राजा की राजकुमारी कुमार-देवी के साथ विवाह किया। इस कारण पाटलिपुत्र और लिच्छवियों का राज्य मिलकर एक हो गये। पाटलि-पुत्र पर चंद्रगुप्त और कुमारगुप्त दोनों का मिला-जुला राज था।

समुद्रगुप्त वीरता में बेजोड़ था। पाटलिपुत्र के सिंहासन पर अपना अधिकार जमाकर वह दूसरे राज्यों को जीतने के लिए निकला। पहले उसने उत्तरी भारत के बहुत-से छोटे-मोटे राजाओं को हरा दिया, फिर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दक्षिण की ओर गया। दक्षिण भारत के कई राज्यों को जीतकर वह पाटलिपुत्र लौट आया। समुद्रगुप्त की इन जीतों के कारण पाटलिपुत्र अपनी उन्नति की चरम सीमा पर पहुंच गया। इन दिनों पश्चिम में गांधार से लगाकर पूर्व में आसाम तक और दक्षिण में लंका से लेकर उत्तर में हिमाचल तक सब ओर पाटलिपुत्र का डंका बज रहा था।

सारे भारत में अपना राज्य स्थापित करके समुद्र-गुप्त ने पाटलिपुत्र में बड़े भारी अश्वमेध-यज्ञ की योजना की। इस अवसर पर हजारों दीन-अनाथों को धन दान में दिया गया। एक सिक्का भी जारी कराया, जिसमें एक तरफ यज्ञ के घोड़े का चित्र बना था।

समुद्रगुप्त के एक विद्वान् राजकर्मचारी हरिषेण ने सम्राट् समुद्रगुप्त के विषय में लिखा है कि वह विद्वानों के सत्संग का प्रेमी था। धन की देवी लक्ष्मी और विद्या की देवी सरस्वती दोनों की ही उसपर कृपा थी। अपनी भुजाओं का पराक्रम उसका सबसे उत्तम साथी था। फरसा, बाण और शक्ति आदि के सैंकड़ों घाव उसके शरीर में थे। उसने लाखों गौएं दान में दी थीं। अपनी तेज बुद्धि और संगीत-कला के ज्ञान से ऐसी सुंदर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

कविता लिखता था कि सब लोग उसे महान् कवि मानते थे।

इसमें संदेह नहीं कि समुद्रगुप्त जहां बहुत ही वीर था, वहां कविता, संगीत तथा दूसरी कलाओं का भी बड़ा प्रेमी था। उसके सिक्कों से उसके जीवन के विविध पहलुओं पर अच्छा प्रकाश पड़ता है। कुछ सिक्कों में वह युद्ध का बाना पहने खड़ा है। बाएं हाथ में धनुष है, दाएं में बाण। कुछमें वह फरसा लिये खड़ा है। प्राचीन काल में फरसा भी युद्ध का हथियार था। इसे धारण करनेवाले परशुराम को कौन नहीं जानता! तीसरे प्रकार के सिक्कों में वह सिंह के साथ युद्ध करता दिखाया गया है। ये सब सिक्के उसकी वीरता का परिचय कराते हैं। इनके अलावा बहुत-से सिक्के कला से युक्त उसके जीवन का परिचय कराते हैं। एक दूसरे प्रकार के सिक्कों में वह आसन पर बैठा वीणा बजा रहा है।

समुद्रगुप्त के समय में लंका का राजा था मेघवर्ण। वहां से दो बौद्ध भिक्षु बोधगया में तीर्थ-यात्रा के लिए आये। वहां उनके रहने के लिए ठीक प्रबंध न हो सका। लंका वापस जाकर उन्होंने अपने राजा मेघवर्ण से इस बात की शिकायत की। मेघवर्ण ने निश्चय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

किया कि बोधगया में एक बौद्ध विहार लंका के यात्रियों के लिए बनवाया जाय। सम्राट् समुद्रगुप्त की आज्ञा लेने के लिए उसने एक दूत-मंडल समुद्रगुप्त के पास भेजा। समुद्रगुप्त ने बड़ी खुशी से इस कार्य के लिए अपनी स्वीकृति दे दी। राजा मेघवर्ण ने बोधिवृक्ष के उत्तर में एक विशाल विहार बनवाया। यहां बाद में बहुत-से भिक्षु निवास करने लगे।

समुद्रगुप्त के बाद चंद्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य की उपाधि धारण करके पाटलिपुत्र और गुप्त-साम्राज्य का स्वामी हुआ। यह भी अपने पिता जैसा ही बली था। उसकी कहानियां आजतक हमारे देश में जगह-जगह कही-सुनी जाती हैं। उसने पाटलिपुत्र के स्थान पर उज्जैनी को अपनी राजधानी बनाया। चीन से फ़ाह्यान नामक चीनी यात्री उसीके समय में भारत में आया था।

जिन दिनों चीनी यात्री फ़ाह्यान इस देश में आया था, उन दिनों भी पाटलिपुत्र देश का सबसे बड़ा नगर था। वहां के निवासी खुशहाल थे। फ़ाह्यान वहां तीन साल तक रहा। बौद्ध धर्म के जिन ग्रंथों का वह अध्ययन करना चाहता था वे सब उसे वहीं पढ़ने को मिले। हालांकि अशोक इसके आने के ७०० वर्ष पहले मर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चुका था, पर इतने समय बाद भी उसने अशोक के समय की बनी हुई बहुत-सी चीजों को अपनी आंखों से देखा था। उसने लिखा है कि अशोक की राजधानी पाटलिपुत्र में अभीतक उसका राजमहल और सभा-भवन मौजूद है। उन्हें देखकर फ़ाह्यान पर इतना असर पड़ा कि उसने उन महलों को आदमी के बनाये न मानकर देवताओं या असुरों का बना मान लिया। उसने लिखा कि इन भवनों की दीवारें और द्वार पत्थर चुनकर बनाये गये हैं। उनपर सुंदर खुदाई और पच्चीकारी का काम

चीनी यात्री फाह्यान

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

है। इस दुनिया के लोग ऐसा काम नहीं बना सकते, जो अबतक नये जैसा दिखाई पड़ता है।

फ़ाह्यान के आने के दो सौ बरस बाद दूसरा चीनी यात्री हुएनसांग भारत में आया। उसने भी पाटलिपुत्र में अशोक के राजमहलों को देखा, पर तबतक वे टूट-फूट चुके थे। इस चीनी यात्री ने पाटलिपुत्र में अशोक के समय का एक बहुत ऊंचा स्तंभ भी देखा था।

: ५ :

गुप्त-राजाओं के अंत के साथ ही पाटलिपुत्र के वैभव की भी कहानी पूरी हो गई। ज्यों-ज्यों समय बीतता गया, पुराना पाटलिपुत्र नष्ट होता गया और होते-होते वहां एक छोटा-सा नगर रह गया। मुसलमानों के जमाने के सुप्रसिद्ध शासक शेरशाह ने पाटलिपुत्र को फिर से ठीक कराया। उसने गंगा के किनारे एक मज़बूत किला बनवाया। इससे वहां फिर बहुत-से लोग आकर बसने लगे। गंगा के तट पर बने होने से यहां व्यापार की एक अच्छी-खासी बड़ी मंडी बन गई। इस समय तक इसका नाम पटना पड़ गया। प्राचीन भारत में बड़े नगर को 'पत्तन' कहते थे। भारत का प्रमुख नगर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

होने के कारण पाटलिपुत्र भी 'पत्तन' कहा जाने लगा। होते-होते यह नाम पटना हो गया।

व्यापार का प्रसिद्ध नगर होने से यहां से बंगाल और भारत के दूसरे प्रदेशों को माल आता-जाता था। अफ़ीम का व्यापार यहां काफ़ी होता था। सत्रहवीं सदी में इसके व्यापारिक महत्व से खिंचकर पुर्तगाली व्यापारी भी पटना पहुंचे और उन्होंने अपनी कोठियां बनाईं। डचों और अंग्रेजों ने भी अपनी कोठियां तैयार कराईं।

अंग्रेजों के जमाने में, १८५७ में, उनके खिलाफ़ विद्रोह की आग भड़क उठी। भारतवासी फिर आजादी पाने के लिए उठ खड़े हुए। दिल्ली, कानपुर, लखनऊ और झांसी आदि नगरों में आजादी की लड़ाई की ज्वाला की लपटें बढ़ते-बढ़ते पटना तक पहुंचीं। पटना के लोगों की एक टोली ने नगर के गिरजाघर पर हमला बोल दिया। पटना में उन दिनों अंग्रेजों की अफीम की कोठी बहुत बढ़ोतरी पर थी। कोठी का मालिक गोली का शिकार हो गया, पर शीघ्र ही सिक्ख सेना ने आकर अंग्रेजों की हालत संभाल ली। जगह-जगह तलाशियां ली गईं और बहुत-से लोगों को फांसी के तख्ते पर चढ़ा दिया गया। तिरहुत के जमींदार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वारिसअली और पीरअली को इन्हीं दिनों फांसी दी गई। यह देखकर पटना के पास दानापुर छावनी की भारतीय सेना बिगड़ पड़ी। वह आरा के विद्रोहियों से जा मिली। उनका नायक जगदीशपुर का प्रभावशाली नेता कुंवरसिंह था। अस्सी साल के इस बूढ़े ने कई महीनों तक अंग्रेजों की सेना के साथ युद्ध किया। अंत में वह मारा गया।

: ६ :

सन् १८५७ का विद्रोह शांत हुआ। फिर से देश अंग्रेजों के पंजे में आ गया। अंग्रेजों ने अपने शासन-काल में बहुत दिनों तक बिहार को बंगाल के सूबे में शामिल करके रखा। इससे पाटलिपुत्र की उन्नति रुक गई। धीरे-धीरे बिहारवासियों ने बिहार को बंगाल से निकालकर एक नया प्रांत बनाने की मांग की।

सन् १९०८ में अलीइमाम की अध्यक्षता में बिहार को प्रांतीय महासभा का बड़ा जोरदार जलसा हुआ, जिसमें बिहार को अलग प्रांत बनाने का प्रस्ताव पास किया गया। तीन बरस बाद सन् १९११ में इंग्लैंड के सम्राट् दिल्ली दरबार के अवसर पर भारत आये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उन्होंने उस समय बिहार-उड़ीसा को बंगाल से अलग करके एक नया प्रांत बनाने की घोषणा की। पटना—पाटलिपुत्र को इस नये प्रांत की राजधानी बनाया गया। इस तरह इसे फिर एक बार प्रांतीय राजधानी होने का गौरव मिला।

उस दिन से प्राचीन पाटलिपुत्र के दिन फिरे। इसका विकास होना शुरू हुआ। इसीका नतीजा है कि आज पटना की गिनती भारत के खास-खास नगरों में है। इसमें आधुनिक ढंग का विश्वविद्यालय है, हाई-कोर्ट है और इसका मैडिकल कालिज तो देशभर में विख्यात है।

गंगा नदी के किनारे पर बसे होने के कारण पटना की अपनी शोभा है। नगर की बस्ती लंबाई में बहुत दूर तक उसके किनारे पर फैली हुई है। नदी में पानी काफ़ी होने के कारण हर मौसम में खूब बहार रहती है। महेंद्रू घाट पर तो गंगा का पाट बहुत ही चौड़ा है। देखकर समुद्र जैसा लगता है। पानी में गहराई भी खासी है, तभी तो उसमें जहाज़ चल पाते हैं। इधर का बहुत-सा यातायात जल के रास्ते से होता है।

नदी के किनारे पर एक बड़ी ही मूल्यवान चीज़ है 'जालान-संग्रहालय'। जालान नाम के एक सज्जन ने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अपने शौक के कारण भांति-भांति की चीजों का संग्रह करना प्रारंभ किया। जाने कहां-कहां से क्या-क्या चीजें उन्होंने प्राप्त कीं। टीपू सुल्तान की पालकी आई तो नेपोलियन की कुछ चीजें इकट्ठी हुईं, चीनी के बर्त्तन आये तो अन्य स्थानों से दूसरा सामान आया। नतीजा यह हुआ कि धीरे-धीरे वह मूल्यवान और दुर्लभ वस्तुओं का सुंदर केंद्र बन गया। आज जालानजी नहीं रहे, पर वह संग्रहालय ज्यों-का-त्यों सुरक्षित है। एक व्यक्ति की मेहनत और साधनों से तैयार किया हुआ इतना सुंदर संग्रहालय दूसरी जगह शायद ही मिले।

पटना की खुदाबख्श लाइब्रेरी और वहां का अजायबघर दोनों बड़े महत्व की संस्थाएं हैं। खुदाबख्श लाइब्रेरी में बहुत-से प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथ हैं।

इसी नगर में सिखों का वह सुप्रसिद्ध गुरुद्वारा है, जहां गुरु गोविंदसिंह का जन्म हुआ था। गुरुद्वारा बड़ा विशाल है और दूर-पास उसकी बड़ी मानता है। सभी धर्मों के लोग वहां आते हैं।

आर्य-समाज की स्थापना करनेवाले स्वामी दयानंद स्वयं पटना गये थे। उन्होंने वहां आर्य-समाज की स्थापना कर बिहार में आर्य-समाज का प्रचार शुरू

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

किया था।

सचिवालय के बाहर उन युवकों की मूर्त्तियां देखने योग्य हैं, जो झंडा फहराते हुए शहीद हुए थे। वे सब नौजवान थे। उनके लिए सबसे अधिक महत्व देश की गुलामी को दूर करना था। उन्होंने अपने प्राणों की भी चिंता न की। झंडा लेकर आगे बढ़े, सीनों पर गोलियां लीं, पर उनके कदम पीछे न हटे। उनकी काया वहीं ढेर हो गई, पर इतिहास में इन वीरों का नाम अमर हो गया। उनकी यादगार में ये महत्वपूर्ण मूर्त्तियां बनवाई गई हैं। उन्हें देखकर हृदय द्रवित हो जाता है।

पाटलिपुत्र हमारे देश का एक बहुत प्रसिद्ध नगर रहा है। आजतक इसमें मौर्यों के जमाने के भवनों के खंडहर दिखाई देते हैं, जो चंद्रगुप्त, अशोक, बुद्ध तथा समुद्रगुप्त की याद दिलाते हैं। पटना के निकट बहने-वाली गंगा को देखकर अनायास ही हिंदी के एक कवि के मुख से ये शब्द निकल पड़े थे—

गूंज रहे तेरे इस तट पर,
गंगे गौतम के उपदेश।
ध्वनित हो रहे इन लहरों में,
देवि ! अहिंसा के संदेश।

... ...

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तुझे याद है ? चढ़े पथों पर।
कितने जप-सुमनों के हार।
कितनी बार समुद्रगुप्त ने,
धोई है तुझमें तलवार।

भारत के राष्ट्रपति राजेंद्रबाबू का बिहार प्रांत के निवासी होने के नाते इस नगर से गहरा संबंध रहा है।

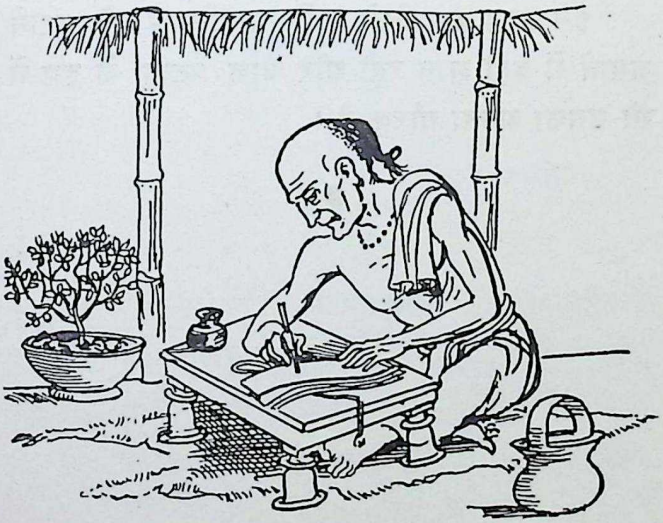

चतुर चाणक्य

जब हम अपने प्राचीन साहित्य को पढ़ते हैं तो उसमें ऐसी अनेक कथाएं आती हैं, जिनमें पाटलिपुत्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

की चर्चा आती है। 'पंचतंत्र' की सुंदर कहानियां, जो विदेशों तक में विख्यात हैं, पंडित विष्णु शर्मा ने पाटलिपुत्र के राजा के पुत्रों को पढ़ाने के लिए ही कही थीं। सुप्रसिद्ध राजनीतिज्ञ और अर्थशास्त्र के लेखक चाणक्य की मंत्रणा का प्रमुख केंद्र पाटलिपुत्र ही रहा है। 'मुद्राराक्षस' नाटक का ताना-बाना पाटलिपुत्र के चारों ओर ही बुना गया था।

इस तरह हम देखते हैं कि पाटलिपुत्र की पुराने जमाने में बड़ी शान रही और आज पटना के रूप में भी उसका अपना गौरव है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"मंडल" द्वारा प्रकाशित प्राप्य साहित्य

आत्मकथा	(गांधीजी)	४·००	स्वराज्य-शास्त्र	,,	०·७५
प्रार्थना-प्रवचन	२ भाग ,,	५·५०	गांधीजी को श्रद्धांजलि	,,	०·३७
गीता-माता	,,	४.००	भूदान-यज्ञ	(विनोबा)	०·२५
पंद्रह अगस्त के बाद	,,	१·५०,२·००	राजघाट की संनिधि में		०·६२
धर्मनीति	,,	१·५०,२·००	विचार-पोथी	,,	१·००
द० अफ्रीका का सत्याग्रह		३·५०	सर्वोदय का घोषणा-पत्र	,,	०२५
मेरे समकालीन	,,	५·००	जमाने की मांग	,,	०·१२
आत्म-संयम	,,	३·००	मेरी कहानी	(नेहरू)	८·००
गीता-बोध	,,	०·५०	,,	संक्षिप्त ,,	२·५०
अनासक्तियोग	,,	०.७५	हिन्दुस्तान की समस्याएं	,,	२·००
ग्रामसेवा	,,	०·३७	लड़खड़ाती दुनिया	,,	२·५०
मंगल-प्रभात	,,	०·३७	राष्ट्रपिता	,,	२·००
सर्वोदय	,,	७·३७	राजनीति से दूर	,,	२·००
नीति-धर्म	,,	०·३७	हमारी समस्याएं	(२ भाग)	१·००
आश्रमवासियों से	,,	०·३७	सं० हिन्दुस्तान की कहानी		२·५०
हमारी मांग	,,	१.००	नया भारत	,,	०·२५
सत्यवीर की कथा	,,	०·२५	आजादी के आठ साल	,,	०·२५
संक्षिप्त आत्मकथा	,,	१·००	गांधीजी की देन (राजेन्द्रप्रसाद		१·५०
हिंद-स्वराज्य	,,	०·७५	गांधी-मार्ग	,,	०·१२
अनीति की राह पर	,,	१·००	महाभारत-कथा (राजाजी)		५·००
बापू की सीख	,,	०·५०	दशरथनन्दन श्रीराम	,,	५·००
गांधी-शिक्षा (तीन भाग)	,,	१·१२	कुब्जा-सुन्दरी	,,	२·००
आज का विचार (दो भाग)		० ७५	शिशु-पालन	,,	०·५०
ब्रह्मचर्य (दो भाग)	,,	१·७५	मैं नहीं भूल सकता	,,	२.५०
गांधीजी ने कहा था	५ भाग	१·२५	गांधी की कहानी (लु० फि०)		४·००
शान्ति-यात्रा (विनोबा)		१·५०	इंगलैंड में गांधीजी		२·००
विनोबा-विचार : २ भाग		३·००	बा, बापू और भाई		०·५०
गीता-प्रवचन	,,	१·५०	गांधी-विचार-दोहन		१·५०
जीवन और शिक्षण	,,	२·००	सत्याग्रह-मीमांसा		३·५०
स्थितप्रज्ञ-दर्शन	,,	१·००	बुद्ध-वाणी (वियोगी हरि)		१·५०
ईशावास्यवृत्ति		०·७५	सन्त सुधासार (संक्षिप्त)	,,	११·००
ईथावास्योपनिषद्	,,	०·१२	श्रद्धाकण	,,	१·००
सर्वोदय-विचार	,,	१·१२	अयोध्याकाण्ड	,,	१·००

Nepal Sanskrit University. Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

			१·००
			०·२५
			१·५०
बापू के आश्रम में	,,	१	३·००
मानवता के झरने (माव०)	१·५०	थेरी-गाथाएं	१·५०
बापू (घ० बिड़ला)	२·००	बुद्ध और बौद्ध साधक	१·५०
रूप और स्वरूप ,,	०·६२	जातक-कथा (आनंद कौ०)	२·५०
डायरी के पन्ने ,,	१·००	हमारे गांव की कहानी	१·५०
ध्रुवोपाख्यान ,,	०·२५	खादी द्वारा ग्राम-विकास	०·७५
स्त्री और पुरुष (टाल्स्टाय)	१·००	साग-भाजी की खेती	३·००
मेरी मुक्ति की कहानी ,,	१·५०	ग्राम-सुधार	१·५०
प्रेम में भगवान ,,	२·००	पशुओं का इलाज	०·५०
जीवन-साधना ,,	१·२५	चारादाना	०·२५
कलवार की करतूत ,,	०·२५	रामतीर्थ-संदेश (३ भाग)	१·१२
हमारे जमाने की गुलामी,,	०·७५	रोटी का सवाल (क्रोपा०)	३·००
बुराई कैसे मिटे ? ,,	१·००	नवयुवकों से दो बातें ,,	०·३७
बालकों का विवेक ,,	०·५०	पुरुषार्थ (डा० भगवानदास)	६·००
हम करें क्या ? ,,	३·५०	काश्मीर पर हमला	२·००
धर्म और सदाचार ,,	१·२५	शिष्टाचार	०·५०
अंधेरे में उजाला ,,	१·५०	तट के बंधन	२·००
ईसा की सिखावन ,,	१·००	भारतीय संस्कृति	३·५०
कल्पवृक्ष (बा० अग्रवाल)	२·००	आधुनिक भारत	५·००
लोक-जीवन (कालेलकर)	३·५०	फलों की खेती	२·५०
साहित्य और जीवन ,,	२·००	मैं तन्दुरुस्त हूं या बीमार	०·५०
कब्ज़ (म० प्र० पोद्दार)	१·५०	नवजागरण का इतिहास	३·००
हिमालय की गोद में ,,	२·००	गांधीजी की छत्रछाया में	२·५०
कहावतों की कहानियां ,,	२·००	भागवत-कथा	३·५०
राजनीति प्रवेशिका	१·००	जय अमरनाथ	१·५०
जीवन-संदेश (ख० जिब्रान)	३·२५	हमारी लोककथाएं	१·५०
अशोक के फूल	३·००	संस्कृत-साहित्य-सौरभ	
जीवन-प्रभात	५·००	(३४ पुस्तकें) प्रत्येक	०·३७
कां० का संक्षिप्त इतिहास	६·००	समाज-विकास-माला	
पंचदशी	१·००	(१०६ पुस्तकें) प्रत्येक	०·३७
सप्तदशी	२·००	कृषि-ज्ञान-कोष	४·००
रीढ़ की हड्डी	१·५०	प्रकाश की बातें	१·५०
अमिट रेखाएं	३·००	धरती और आकाश	१·५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वाल्मीकिविद्यापीठपुस्तकालयः

प्रत्यावर्तनतिथिः

६ श्रावण २०४०

१·००
०·२५
१·५०
३·००
१·५०
१·५०
२·५०
१·५०
०·७५
३·००
१·५०
०·५०
०·२५
१·१२
३·००
०·३७
६·००
२·००
०·५०
२·००
३·५०
५·००
२·५०
०·५०
३·००
२·५०
३·५०
१·५०
१·५०

०·३७

०·३७
४·००
१·५०
१·५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

समाज-विकास-माला की पुस्तकें

१. मदरौलक्ष्म
२. भजन की टेर
३. श्रीमद्भागवत
४. विधि और दर्शोपि
५. विनोबा और भूदान
६. कबीर के मेल
७. मांझीओं का विद्यार्थी-जीवन
८. संमाजी
९. सौलम सूम
१०. सांच सुखी, हम सुखी
११. विचार और संसरी
१२. जिन्दगी खमीन ?
१३. ऐसे थे सरदार
१४. चैतन्य महाप्रभु
१५. कहावतों की कहानियाँ
१६. सरल व्यायाम
१७. हारुका
१८. बापू की बातें
१९. बाहुबली और भरतेश्वर
२०. बहुरूपी इश्वर लिंगायत
२१. बीमारी कैसे दूर करें ?
२२. मतदी की सुरत आती
२३. तिरिमर की कहानियाँ
२४. रहीम के दोहे
२५. गीता-प्रवेशिका
२६. तुलसी-मानस-मोती
२७. बादू की वाणी
२८. कबीर की साखें
२९. संत तुकाराम
३०. हजरत उमर
३१. शंकरप्रभु देशपांडे
३२. विश्वबन्धुत्वर
३३. कस्तूरबा गांधी
३४. शहद की खेती
३५. कावेरी
३६. तीर्थराज प्रयाग
३७. तैल की कहानी
३८. हम सुखी कैसे रहें ?
३९. गो-सेवा क्यों ?
४०. कैलास-मानसरोवर
४१. अच्छा किया या बुरा ?
४२. नरसी मेहता
४३. पंढरपुर
४४. ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती
४५. संत ज्ञानेश्वर
४६. धरती की कहानी
४७. राजा भोज
४८. ईश्वर का मंदिर
४९. गांधीजी का संसार-प्रवेश
५०. ये थे नेताजी
५१. रामेश्वरम्
५२. कवीं का विवाह
५३. रामकृष्ण परमहंस
५४. समर्थ रामदास
५५. मीरा के पद
५६. मिल-जुलकर काम करो
५७. कालागानी
५८. पावभर आटा
५९. खंडेरे की रोजनी
६०. भगवान के प्यारे
६१. हाजी अल-वजीद
६२. वीरवर महावीर
६३. हमारे पड़ोसी
६४. आकाश की बातें
६५. सच्चा तीरथ
६६. हाजिर-जवाबी
६७. विद्यापति-पदावली : भाग १
६८. विद्यापति-पदावली : भाग २
६९. मेहनती का विद्यार्थी-जीवन
७०. सूरदास
७१. माता कस्तूरबा
७२. गुरु नानक
७३. हमारा संविधान
७४. राजेंद्रबाबू का बचपन
७५. परमहंस की
७६. योग का कर
७७. सांसों की रा
७८. हुआ सवेरा
७९. शौरसेन की
८०. मन के जीते
८१. सुरम्बी
८२. हरिद्वार
८३. आगर की
८४. आनंदमान के
८५. महात्मा गां
८६. संतु हरि
८७. देवलोकों का प्यार
८८. देश को आगे बढ़ना
८९. हमारे मुस्लिम संत
९०. नन्हा अबाबील
९१. स्वामी विवेकानंद
९२. आप भला, जग भला
९३. नासिक
९४. सूर के पद
९५. संत नेमनाथ
९६. धाराम हराम है
९७. गोरा-बादल
९८. पाटलिपुत्र
९९. महर्षि अगस्त्य
१००. दानवीर कर्ण
१०१. खेल साहो
१०२. गोदावरी
१०३. कुम्हार की बेटी
१०४. गणेश
१०५. शंकराचार्य
१०६. धनराज
१०७. महारानी अहिल्याबाई
१०८. पढ़ेंगे-लिखेंगे
१०९. कोणार्क
११०. मंगू

मूल्य : प्रत्येक पुस्तक [illegible]

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu